

Title - X 3-12117

Accession No - Title - X

Accession No -

Folio No/ Pages -

Lines-

Size

Substance Paper -

Script Devanagari

Language –

Period -

भी अविद्याभ नमः Beginning -

डोते सुद्यनि नीहतायों भी राम चन्द्र कीता मनो छ-पंचमुखी हनुमत् मन् यंश्रीम् End -

Colophon-

Illustrations -

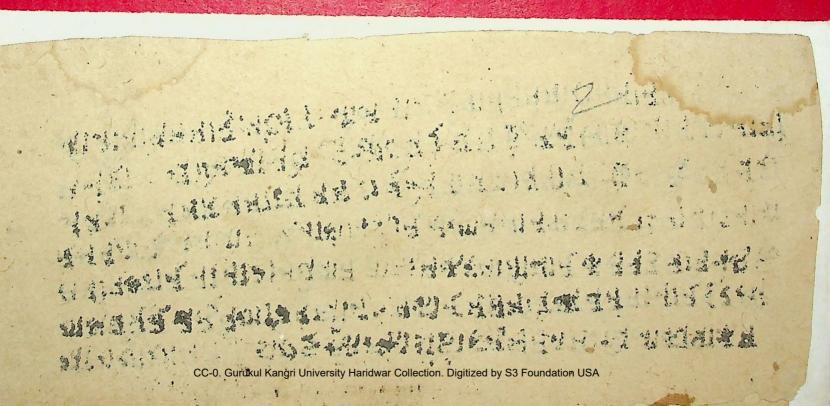
Source - ×

Subject -

Revisor -

1 Author -

Remarks- \ - हत्रात्वाक्त्री गर्गायानम् डॉलंड्सीसंता डॉर्डाहनुमनेनमः चिलासाबाक्रम शासवीत्व बहुवैशाबि इस्तीन इसका न् भूतभिव व्यवनीमाना न् र्रस्य समीपस्यान् ना ना ना मध्यान् ना ना संकरया नी यान् कल अ उ अभि अ पृत् स्ममेमान् धनधान्यादिनासं निकान् तस्तान वानपादयम् दिनायदिनापा जीवार् ने वे मार य मारण मम शत्रुनिव मे घरो वियो छे ज छ दय छ दय भेश 



मार्वरपरेक वस्मरिये ने वस्मरिये वत्समिनियाः इति सुद्र्यानमिति। यात्रीरामचद्रसीतामाना हरपंचाम् रवी हरामत कवचसप् रिगमस्का मस्का मस्का १८ ट र मित्री चेन बदी १२ चारप्रान अवर बारणियतम् दुलासराय वाची स्वामीरामभ बकी। अगरकी सीका दावा मिहाराम जी सदासहाय आग्राजा मिहाय

. CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हिबारतपरेत्स्तानं प्रज्ञपोत्र प्रबद्धनं त्रिबार हेपरे त्तानं सवसंपत्क रश्रमं बतुंबीरंपरे नित्यंसविरोणिनवार रंगं च बारंपरे निर्त्य पंचान्यविवां वर्धवारपे कित्रत्मवदेववंत्राकरं मध्य रंपहे नित्य सर्वसी भाग्य रायके मुख्बारेपहानेत्य रहकामा शिमिद्दि नववारंपहेनित्यमञ्जूने विवर्द्धने दक्रवारंपहे नित्य मेलाल्यमानद्रितं एकाद्रशपहेन्सेत्यमवीमिद्दिक



